अध्याय : 7

उद्योग–धन्धा

उद्योग–धन्धा

अकबरकालीन राजस्थान में स्थित उद्योगों के विषय में तत्कालीन ग्रन्थों में बहुत कम जानकारी दी गई है, परन्तु अकबर की विजयों ने राजस्थान के परम्परागत उद्योगों पर व्यवधान उपस्थित नहीं किया था। गाँवों तथा शहरों में कारीगर तथा शिल्पी अपने पुराने उद्योगों को बरकरार रखे हुए थे। उनके औजार भी वही थे और उसमें कोई विशेष तकनीकी विकास नहीं हुआ था। उस समय में बड़े पैमाने पर किसी उद्योग का विकास नहीं हुआ था। अधिकांश उद्योग स्थानीय रूप में थे जो पिता से पुत्र को कई पीढ़ियों तक हस्तांतरित किए जाते रहे थे।[1] स्थानीय मांग के अनुसार विभिन्न प्रकार की चीजों को बनाने के लिए कारखाने स्थापित किए गए थे। कारखानों में बनने वाली अधिकांश चीजें दरबारियों को तथा ऊँचे अधिकारियों को भेंट की जाती थीं।

अकबर ने अर्थशास्त्र के इस सिद्धांत को भली–भाँति समझ लिया था कि उसके साम्राज्य की भौतिक समृद्धि और आर्थिक सम्पन्नता उसके साम्राज्य की उद्योग–व्यापार की प्रगति और प्रोत्साहन पर, कृषि की उन्नति और कृषकों की खुशहाली पर तथा उसके उदार संरक्षण पर निर्भर है। इसलिए अकबर ने उद्योग–व्यवसायों, कृषि और हस्तकला कौशल को खूब प्रोत्साहन दिया। राज्य की ओर से निजी व्यवसायों को तथा विदेशों से थल मार्ग के व्यापार को खूब प्रोत्साहन दिया गया। इसलिए इस युग में विदेशी व्यापारी और यात्री भारत की ओर अधिक आकृष्ट हुए।

कृषि की उन्नति के लिए अकबर ने राजस्व प्रणाली में अनेक सुधार किये, बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के प्रयत्न किये गये। कृषकों, उद्योगपतियों और व्यापारियों के हितों की सुरक्षा के लिए कानून बनाये गये। इससे प्रजा की भौतिक सम्पन्नता में वृद्धि हुई, राष्ट्रीय आय बढ़ गयी और हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने समान रूप से देश की सम्पन्नता में हाथ बटाया एवं दैनिक जीवन में वे एक दूसरे

से अधिक समीप आ गये। साम्राज्य की भौतिक सम्पन्नता के कारण अकबर अपने युग का सबसे धनी सम्राट माना जाने लगा था। उसके संचित राजकोषों के केवल सिक्कों का ही मूल्य चार करोड़ स्टलिंग (लगभग 300 करोड़ रूपये) था।[2]

मुगल सम्राट्ों ने अधिक उत्पादन की तरफ विशेष ध्यान दिया। उन्होंने नगरों की प्रगति के लिये गाँवों का समृद्धिशाली होना आवश्यक समझा। उन्होंने किसानों को अधिक उपज के लिये विशेष प्रोत्साहन दिया। नागरिक उद्योगों में काम आने वाले कच्चे माल की अधिक उपज के लिये किसानों को विशेष छूट दी गई। अफीम और कपास जैसी बहुमूल्य फसलों की खेती के लिये किसानों को प्रोत्साहन दिया गया, जिसको विदेशों को भेजकर धन प्राप्त किया जा सके और कच्चे माल की उद्योग को दिया जा सके। मुगल काल की यह विशेषता थी कि कृषि क्षेत्र में अधिक उत्पादन को औद्योगिक समृद्धि का आधार बनाया गया।[3] मुगलों के पहले दिल्ली के सुल्तानों बलबन, गयासुद्दीन तुगुलक और मुहम्मद तुगलक ने भी ऐसा करने का प्रयास किया, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली।[4] डॉ. हमीदा खातून के अनुसार मुगल सम्राट्ों ने साम्राज्य के हित में बहुमूल्य फसलों की उपज के लिये किसानों को सुविधायें दीं। मुगल प्रशासन नहीं चाहता था कि अत्यधिक खाद्यान्न उत्पादन से मूल्य में गिरावट आ जाय और किसानों को उनके श्रम का वास्तविक लाभ न मिले। इसीलिये मुगलों की नीति आर्थिक संतुलन बनाये रखने की थी। इसी उद्देश्य से कुछ वर्ग के किसानों को खाद्यान्न के बजाय बहुमूल्य फसलों की खेती करने के लिये कहा गया, जिससे नगर के कारखानों को कपास और अन्य कच्चा माल आसानी से उपलब्ध हो सके।[5]

इस नीति के कारण प्रमुख फसलों में कपास की खेती देश के विभिन्न भागों में की जाने लगी। पास के गाँवों से नगरों में रूई आने लगी, जिससे कपड़े का उत्पादन बढ़ा। मुगल काल में नगर उद्योगों के मुख्य केन्द्र थे।[6]

मुगल शासकों ने नगरों के पास बगीचे लगवाया, जिसमें तरह–तरह के फलों के वृक्ष लगाये।[7] इससे राज्य को अधिक आय होती थी, इससे पहले फीरोज तुगलक ने दिल्ली के समीप 1200 बाग लगवाये थे जिससे 1,80,000 टंका की

सालाना आमदनी हुई। बागों से गाँव और नगर दोनों में रहने वालों को लाभ होता था। बाग लगवाने से सभी भूमि का उपयोग हो जाता। इससे कोई भूमि बेकार नहीं रहती थी।[8] अकबर ने सामान्य रूप से फलों के बाग लगाने के लिये 2¾ रूपया प्रति बीघा की दर से कर लगाया।[9]

राजस्थान सदैव से कृषि–प्रधान देश रहा है। अकबर के समय भी यहाँ की अधिकांश जनसंख्या का जीवन–निर्वाह खेती द्वारा होता था। साधारण फसलों के अतिरिक्त गेहूँ, जौ, चना, मटर तथा तिलहन, गन्ना, नील, पोस्त आदि राजस्थान में उत्पादित होता था।

कुछ लाभदायक तथा व्यावसायिक फसलें जिन्से–कामिल के रूप में प्रसिद्ध थीं, जैसे – नील, पान, धतूरा तथा गन्ना। जिन्सेनाकिस निम्न श्रेणी की फसलों को कहा जाता था जिसमें ज्वार, बाजरा, चना आदि थे। इस प्रकार कृषि उत्पादन में राजस्थान आत्मनिर्भर था। अकाल तथा बाढ़ के रूप में मौसम का कुप्रभाव फसल को नष्ट कर देता था अतः सम्राट द्वारा हानि की क्षतिपूर्ति हेतु सुविधाएँ उपलब्ध करवायी जाती थीं।[10]

अकबर के समय के तीन इतिहासकारों ने लिखा है कि उस समय साम्राज्य की अधिकतर भूमि कृषि के योग्य थी।[11] परन्तु 1575 ई. में भूमि की नाप करवाने पर ज्ञात हुआ कि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों तथा जनसंख्याविहीन कृषि योग्य क्षेत्र बिना खेती के खाली पड़े हैं।[12] अतः अकबर ने समस्त साम्राज्य की भूमि की चाहे वह जंगल में हो, रेगिस्तान अथवा पहाड़ों आदि में क्यों न स्थित हो, नाप करवायी तथा उस पर कृषि उत्पादन का आदेश दिया।[13]

अकबर के शासनकाल के 27वें वर्ष टोडरमल ने यह नीति अपनायी कि केवल बोयी हुई भूमि की ही नाप न की जाय वरन् उस भूमि की नाप भी करनी चाहिये जो खेती योग्य हो। अतः ज्ञात आंकड़ों द्वारा प्रतिवर्ष कृषि हेतु भूमि में वृद्धि सम्भव व सरल हो सकेगी।[14]

अकबर के समय कृषि का बहुत विस्तार हुआ। उस समय ऊसर तथा बेकार भूमि पर निरन्तर खेती करके उसे कृषि योग्य बनाया जाता था तथा जंगलों

को साफ करके उस भूमि पर खेती की जाती थी जिससे भूमि उपजाऊ बन जाती थी।[15]

अजमेर सूबा – अजमेर सूबे की लम्बाई पुष्कर गाँव तथा नगराना से बीकानेर व जैसलमेर तक 168 कोस थी। इसकी चौड़ाई अजमेर सरकार से बांसवारा तक 150 कोस थी। इसके पूर्व में राजधानी आगरा थी, उत्तर में दिल्ली के कस्बे थे, दक्षिण में गुजरात तथा पश्चिम में दीमालपुर तथा मुल्तान थे।[16] भूमि रेगिस्तानी थी तथा जल बहुत गहरायी तक खोदने पर ही निकलता था।[17] अजमेर में रबी की फसल कम होती थी तथा ज्वार, लहदरा तथा मोंठ का उत्पादन अधिक था।[18]

रबी की फसल – रबी की फसल को असाढ़ी तथा चैती भी कहते थे। यह बसन्त ऋतु की फसल थी। जिसकी मालगुजारी की वसूली होली से प्रारम्भ की जाती थी। रबी की फसल में उत्पादित अनाज निम्न थे – गेहूँ, चना, मसूर, जौ, अलसी, मुअस्फर अर्थात् कुसुम्भ, अर्जन अर्थात् चीना, सरसों, मटर, मेथी आदि। खरबूजा, अजवाइन, प्याज आदि रबी के अन्तर्गत आती थीं।[19]

खरीफ की फसल – खरीफ की फसल को सावनी भी कहते थे। यह शरद ऋतु (पतझड़) की फसल थी जिसकी मालगुजारी की वसूली दशहरा से आरम्भ की जाती थी। खरीफ की फसल में विभिन्न प्रकार के धान, गुड़, कपास, शाली मुश्कीन अर्थात् चावल, माश, मोठ, ज्वार, तिल, लहदरह, तिल, कुल्त (अर्थात् मसूर की भाँति परन्तु रंग काला होता था) आदि अनाज होते थे। इसके अतिरिक्त नील, पोस्त, पान, हल्दी, सिंघाड़ा, सन, कद्दू, मेंहदी, ककड़ी, खीरा, मूली, गाजर, करेला आदि भी इसके अन्तर्गत लिखे गए हैं।[20]

आईने अकबरी में अबुल फजल ने रबी की सोलह फसलों का उल्लेख किया है। ये सभी आगरा के प्रत्येक परगने में बोई जाती थीं। अन्य तीन फसलें थीं जो प्रत्येक स्थान पर नहीं बोई जाती थीं। इसी प्रकार खरीफ की पच्चीस फसलें थीं। दो अतिरिक्त फसलें थीं। दिल्ली क्षेत्र में सत्तरह रबी तथा छब्बीस खरीफ की फसलें बोई जाती थीं। इस प्रकार चालीस या उससे अधिक फसलें बोई

जाती थीं।[21] अबुल फजल ने कुछ उच्च श्रेणी की लाभदायक तथा व्यावसायिक महत्व रखने वाली फसलों तथा निम्न श्रेणी की फसलों का उल्लेख भी किया है।

साधारण तौर पर रूई का उत्पादन प्रत्येक स्थान पर होता था तथा प्रति बीघा उत्पादन सात मन बीस सेर था।[22] अकबर ने सभी व्यावसायिक फसलों को प्रोत्साहन दिया। उसने रूई की फसल के लिये अमर–गुजार को आदेश दिया कि यदि यह फसल सर्वप्रथम साधारण भूमि पर बोई गई हो तो पहले वर्ष में कर में ¼ भाग की छूट दे।[23]

नील का सर्वाधिक उत्पादन बयाना में होता था।[24] नील की विदेशों में अत्यधिक माँग होने के कारण इसका व्यावसायिक महत्व बढ़ गया था। पान की खेती लगभग प्रत्येक क्षेत्र में होती थी।

जिन्से नाकिस – जिन्से नाकिस के अन्तर्गत निम्न श्रेणी की फसलें आती थीं जिनमें ज्वार, बाजरा, चना तथा तेल प्रदान करने वाले बीज आदि प्रमुख थे।[25]

अबुल फजल ने आईने अकबरी में उत्पन्न होने वाली प्रत्येक फसल की दस्तूर सारणी दी है।[26] इसमें गेहूँ, चावल, दाल, गन्ना, कपास, जूट, बाजरा, ज्वार, तेल निकालने वाले बीज, नील, धतूरा, पान, सिंघाड़ा इत्यादि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न तरकारियाँ, फल, घी, शक्कर, मसाले तथा विभिन्न प्रकार के सूखे फल अर्थात् मेवे के मूल्यों की सारणी दी है।[27]

मोरलैण्ड ने अबुल फजल द्वारा दी गयी विभिन्न फसलों के मूल्यों पर आधारित सारणी का निरीक्षण करने के पश्चात् विभिन्न फसलों के अनुमानित मूल्य को गेहूँ की तुलना में ज्ञात करने का प्रयास किया है। यदि गेहूँ का मूल्य 100 रूपये मान लें तो कुछ प्रमुख फसलों का तुलनात्मक मूल्य इस प्रकार होगा –

गेहूँ	100 रूपये	गेहूँ	100 रूपये
गन्ना	213 रूपये	ज्वार	59 रूपये
रूई	150 रूपये	बाजरा	42 रूपये
नील	254 रूपये	चना	60 रूपये
		अलसी	51 रूपये

इस तुलनात्मक अध्ययन द्वारा जिन्से कामिल तथा जिन्से नाकिस का अन्तर भी स्पष्ट हो जाता है।[28]

अकबर ने वर्षा की अधिकता के समय 21½ बिसवा भूमि पर कर में पूर्ण रूपेण छूट देने का आदेश दिया।[29] इसी प्रकार वर्षा की कमी से अनाज के मूल्यों में वृद्धि के समय प्रत्येक शहर में मुफ्त भोजन बँटवाया गया।[30]

इरफान हबीब के अनुसार प्रत्येक प्रकार के कर–निर्धारण की प्रणाली में सूखा, बाढ़ आदि के समय फसल खराब होने पर किसानों को रियायत दी जाती थी।[31] गल्लाबख्शी तथा कन्कुट में यह स्वतः प्राप्त हो जाती थी क्योंकि फसल का बँटवारा होता था। जब्त तथा नस्क प्रणाली में फसल नष्ट होने पर नाबूद दिया जाता था। अर्थात् खराब फसल पर कोर्ट के विशेष निर्देशों के पश्चात् कर नहीं लिया जाता था।[32] जो भूमि बेकार घोषित की जाती थी उसे नाबूद कहा जाता था। यदि फसल की खराबी भूमि की नपाई के पश्चात् बतायी जाती थी तब सरकारी अधिकारी खड़ी फसल का निरीक्षण करने जाते थे। यदि फसल की खराबी की सूचना फसल काटने के पश्चात् दी जाती थी तब भूमि मालिक अथवा पटवारी के पत्रों पर लिखकर उस किसान को दस्तूर में छूट दी जाती थी।[33] शासन के 27वें वर्ष में टोडरमल ने एक बीघा भूमि पर 21½ बिसवा अर्थात् नापी गयी भूमि का 12 प्रतिशत नाबूद भूमि के लिये निश्चित किया तथा यह तब वसूल किया जाता था जब मौसम उपयुक्त हो तथा वर्षा होने की सम्भावना हो। इसी प्रकार जंगल तथा रेगिस्तानी भूमि के लिये 3 बिसवा अर्थात् 15 प्रतिशत नाबूद भूमि निश्चित की गयी।[34]

अकबर के समय साधारणतः राजस्थान आत्मनिर्भर था। कृषि की भाँति अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार उत्पादन होता था।[35] केवल कुछ कच्चा माल तथा कुछ धातुएँ विदेशों से आयात होती थीं।

परम्परागत उद्योग

अकबरकालीन राजस्थान में खानदानी उद्योग धन्धों में निपुण होते थे।[36] उनकी जातियों के आधार पर उनके धन्धों को समझा जा सकता है–

क्र.सं.	जाति	धन्धा
1.	दर्जी	कपड़ों की सिलाई का कार्य करते।
2.	सोनार	सोने व चाँदी की घड़ाई का धन्धा करते।
3.	नाई	बाल काटने का कार्य करते।
4.	नीलगर	रंगरेज जो नील की रंगाई प्रधान रूप से करते।
5.	कसलगर	लोहे के औजारों पर पालिश करते व धार लगाते।
6.	खेलवार	नमक बनाने का व्यवसाय करते।
7.	कंसारा, ठठेरा	पीतल, तांबा व कांसी के बर्तनों का निर्माण करते तथा बेचते।
8.	खाती	लकड़ी की वस्तुओं का निर्माण करते।
9.	तंबोली	पान, सुपारी बेचने का धन्धा करते।
10.	साबणगर	साबुन बनाने का धन्धा करते।
11.	कुम्हार	मिट्टी केबर्तन बनाकर उपलब्ध कराते।
12.	गांछा	टोकरियां बनाने का धन्धा करते।
13.	सिलावट	मकान पर सिलायें चढ़ाने का कार्य मुख्य रूप से करते।
14.	धोबी	कपड़े धोने का कार्य करते।
15.	नाळबंध	बन्दूक की नाल तैयार करते।
16.	जुलाहा	कपड़ा बुनने का व्यवसाय करते।
17.	कुंजड़ा	फल बेचने का धन्धा करते।
18.	चितारे	रंगसाजी एवं चित्रकारी से मकानों को सुसज्जित करते।
19.	तेली	खाद्यान्न तेल निकालने का कार्य करते।
20.	माली	फल, फूल एवं सब्जियां बोते और उपलब्ध कराते।
21.	कलाल	शराब बनाने व बेचने का धन्धा करते।
22.	छींपा	कपड़े पर छपाई का कार्य करते।
23.	कहार	पालकी उठाने व पानी भरने का कार्य करते।
24.	लोहार	कृषि व घरेलू लोहे के उपकरणों का निर्माण करते।
25.	घोसी	दुधारु पशुओं का पालन करते व दूध बेचते।
26.	घांची	दूध बेचने का कार्य करते।
27.	मोची	चमड़े की वस्तुएँ बनाते।
28.	जटीया वणगर	ऊँट तथा बकरी आदि पशुओं के बालों की बुनाई से वस्तुएँ बनाते।
29.	भड़भूंजा	अनाज को भाड़ द्वारा भूनने का कार्य करते।
30.	तीरगर	तीर बनाने का काम करते।

31.	लखारा	लाख की चूड़ियां बनाने व बेचने का कार्य करते।
32.	पिंजारा	रुई के धुनकने, खोलने व साफ करने का धन्धा करते।
33.	सौदागर	वस्तुओं का सौदा करते।
34.	खटीक	पशुओं (बकरा, भेड़, हिरन,चीता) के चमड़े को पकाने का कार्य करते।
35.	जटीया	पशुओं (गाय, बैल, ऊंट) के चमड़े को पकाते
36.	सरगरा	ओड़ियां बनाने का धन्धा करते।
37.	नगर नायका	नाचगान करने वाली वैश्याएँ जो मनोरंजन करातीं।

इससे स्पष्ट है कि आवश्यक सेवाओं से जुड़े धन्धों के लिए राजस्थान काफी आत्मनिर्भर था।

कपड़ा उद्योग – अकबर के समय उद्योगों में प्रमुख स्थान कपड़ा उद्योग का था। विभिन्न प्रकार के सूती, ऊनी, सिल्क तथा जूट के वस्त्रों का निर्माण किया जाता था। अबुल फजल ने अपनी पुस्तक में सभी कपड़ों के मूल्यों की सारणी दी है। सर्वाधिक महँगा कपड़ा खासा था जो 15 मोहर का था, तत्पश्चात् चौतार का मूल्य 9 मोहर, गंगाजल तथा वाफ्ता का मूल्य 5 मोहर, सालू, जेरिया तथा मनदिल का मूल्य 2 मोहर तथा झोना व फोताह मूल्य 1 मोहर 6 रूपये का होता था। छींट का मूल्य 1 रूपये गज था।[37] चूँकि भारत का प्रमुख उद्योग सूती वस्त्र था अतः सूती वस्त्र का विस्तृत वर्णन आवश्यक ज्ञात होता है। अकबरकालीन राजस्थान ऊन तैयार करने का प्रसिद्ध केन्द्र था।

सूती वस्त्र – यह प्राचीन उद्योग रहा है, जिसका विस्तार मध्यकालीन समय में भी हुआ। उस समय में यह सबसे बड़ा उद्योग था, जिसका विस्तार राजस्थान सहित सम्पूर्ण देश में हुआ। भारत में सूती वस्त्र का विश्व में महत्वपूर्ण स्थान था। अकबर ने सूती वस्त्र विशेषतः छींट के वस्त्रों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया।[38] सूती वस्त्र उत्पादन में प्रमुख स्थान कैलिको नामक वस्त्र का था। इसका उत्पादन राजस्थान में होता था। यह सादा सूती कपड़ा होता था जो सफेद भी होता था तथा अनेक रंगों में रंगा भी जा सकता था।[39]

मोरलैण्ड ने सूती वस्त्रों को निम्न तीन श्रेणियों में बाँटा है – कैलिको, मसलिन, अन्य मनभावन वस्तुएँ जैसे रूमाल, छोटे रंगे हुए कपड़े तथा सिल्क मिश्रित कपड़े इत्यादि।[40] मसलिन तथा कैलिको वस्त्रों में अधिक अन्तर नहीं था। मसलिन पतला होता था तथा भार में कैलिको से हल्का होता था। इसका प्रयोग पगड़ी बनाने में होता था।[41]

विभिन्न प्रकार के वस्त्रों पर अलग–अलग भाषा में निर्मित किये गये स्थान का नाम तथा अन्य विवरण लिखा जाता था।[42]

आईने अकबरी में सूती वस्त्रों के नाम तथा मूल्यों की सूची दी गयी है जो इस प्रकार है[43] –

नाम	**मूल्य**
खासा	तीन रूपये से 15 मोहर
चौतर	दो रूपये से 9 मोहर
मलमल	चार रूपये
तनसुख	चार रूपये से 5 मोहर
सिरीसफ	दो रूपये से 5 मोहर
गंगाजल	चार रूपये से 5 मोहर
भिरौन	चार रूपये से 5 मोहर
साहन	एक रूपये से 3 मोहर
ज्ञोना	एक रूपये से 1 मोहर
अतान	ढाई रूपये से 1 मोहर
असावली	एक रूपये से 5 मोहर
बफता	डेढ़ रूपये से 5 मोहर
महमूदी	आधा रूपये से 3 मोहर
पंच तौलिया	एक रूपये से 3 मोहर
ज्ञोला	आधा रूपये से 2½ मोहर

सालू	तीन रूपये से 2 मोहर
डोरिया	छः रूपये से 2 मोहर
बहादुरशाही	छः रूपये से 2 मोहर
गर्बा सूती	डेढ़ रूपये से 2 मोहर
शेला	आधा रूपये से 2 मोहर
मिहिरकुल	तीन रूपये से 2 मोहर
मिन्दिल	आधा रूपये से 2 मोहर
सरबन्द	आधा रूपये से 2 मोहर
दुपट्टा	एक रूपये से 1 मोहर
कतान्चा	एक रूपये से 1 मोहर
फोता	आधा रूपये से 6 रूपये
गोशपेच	एक रूपये से 2 रूपये
छींट	दो रूपये से 1 रूपये
गज़ीना	आधा रूपये से 1½ रूपये
सिलाहफी	दो रूपये से 4 दाम[44]

ऊन उद्योग

अकबरकालीन राजस्थान में ऊन का उद्योग विकसित हुआ था। अजमेर और नागौर इसके प्रमुख केन्द्र थे। ऊन का उद्योग प्रमुख तौर से कश्मीर में था। वहाँ भेड़ और बकरी के बाल से ऊन तैयार किया जाता था। काबुल में बड़े–बड़े चारागाह भेड़ों के लिए होते थे। ऊन की कई किस्में थीं, जिनका विस्तृत विवरण अबुल फजल ने आईने अकबरी में दिया है।[45] अकबर के कश्मीर पर अधिकार करने के पहले दुशाला बनाने का काम कश्मीर में होता था। अकबर ने इस उद्योग को प्रोत्साहित किया। उसने दुशाला में नये–नये रंगों के प्रयाोग के लिए अपने सुझाव दिये।[46] उसके सुझाव कहाँ तक अमल में लाये गये, इसकी विस्तृत

जानकारी प्राप्त नहीं है। कश्मीर में लगभग 2 हजार कारखाने दुशाला बनाते थे। इसका प्रमुख केन्द्र श्रीनगर था।[47] जहाँगीर के समय में सर टामस रो भारत में आया था। उसे भारतीय कारीगरों की बड़ी सराहना की।[48] काबुल से भी ऊन के उद्योग का विकास हुआ। यहाँ के बने सस्ते कम्बल आगरा के बाजार में बिकते थे। एक कम्बल की कीमत 10 दाम थी।[49] लाहौर में भी ऊन का कारखाना था, लेकिन यहाँ का बना सामान घटिया किस्म का था।[50] यहाँ 100 कारखाने थे जो नकली रूई और दूसरे सूत मिलाकर नकली दुशाला बनाते थे।[51] अजमेर और नागौर में भी ऊन के कारखाने थे।[52]

मुगल साम्राज्य के भिन्न–भिन्न भागों में ऊन के कई कारखाने थे। भारतीय भेड़ों के ऊन अच्छी किस्म के नहीं थे। इसके बने कपड़े घटिया होते थे। कश्मीरी और विदेशी ऊनी कपड़े अच्छी किस्म के होते थे।

पत्थर उद्योग

अकबरकालीन राजस्थान में लाल, पीले पत्थर और सफेद संगमरमर इमारतों के निर्माण के काम में लाये जाते थे।[53] साधारण और आलीशान मकानों में अन्तर का पता पत्थरों के इस्तेमाल से लगाया जा सकता था।[54] पत्थर की इमारतें बहुत टिकाऊ और मजबूत होती थीं। बहुत से किलों, नगरों की दीवारों, मदरसों, मसजिदों, स्नानागारों और जन–कल्याण संबंधी इमारतों के बनवाने में पहले पत्थर की किस्म के विषय में निर्णय लिया जाता था।[55]

अकबरकालीन नगरों के विकास से यह आवश्यक था कि मजबूत इमारतें बनाई जायें, जिससे बार–बार मरम्मत की आवश्यकता न पड़े।[56] मुगल काल में न केवल पत्थर के बल्कि ईंट, लकड़ी और लोहे से भी मकान बनवाये जाते थे। नगरों के विकास के कारण बहुत सी इमारतें बनीं।[57] आलोच्य काल की इमारतों की विशेषता यह थी कि इनमें पत्थर और ईंट का प्रयोग किया गया था, जबकि प्राचीन काल में प्रायः मकान मिट्टी और फूस के बनते थे।[58] इससे पत्थर उद्योग का तेजी से विकास हुआ।

मिट्टी के बर्तन

चमकीले तथा बिना चमकीले चित्रित बर्तन प्राग ऐतिहासिक काल में भी प्रचलित थे। उत्तरवर्ती काल में भी ऐसे बर्तन बनते थे। मध्ययुग में यह उद्योग बड़ा विकसित था। कुम्हार मिट्टी के बर्तनों, खिलौनों आदि पर चमकीले कलात्मक तथा शोभायुक्त डिजाइन बनाते थे। राजस्थान इस उद्योग के मुख्य केन्द्रों में से था।[59]

कारखाने – आईने अकबरी के अनुसार राजकीय कारखानों की संख्या 100 थी।[60] लाहौर, आगरा, फतेहपुर, अहमदाबाद, बुरहानपुर, अजमेर तथा कश्मीर में राजकीय कारखाने थे।[61] इन कारखानों में सूती, ऊनी तथा सिल्क के वस्त्र, शाल तथा कालीन आदि के अतिरिक्त हथियार, शोरा, इत्र, सोने–चाँदी की कारीगरी तथा अन्य हस्तकौशल की वस्तुएँ बनती थीं।[62] शक्कर बनाने के कारखाने, नमक का निर्माण तथा विभिन्न खानों पर राज्य का एकाधिकार होता था।[63] इन कारखानों में निर्मित उत्कृष्ट सामग्री सम्राट के लिये सुरक्षित रखी जाती थी।[64]

तारीख–ए–फिरोजशाही के अनुसार प्रतिवर्ष प्रत्येक राजकीय कारखाने पर बड़ी मात्रा में धन व्यय किया जाता था। इनमें से कुछ गोदाम रातिबी थे अर्थात् जिनके लिये वार्षिक धन का अनुदान निश्चित रहता था।[65] इनमें हाथीशाला, अश्वशाला, ऊँट, खच्चरशाला, भोजनालय, मधग्रह तथा कालीन के कारखाने विशेष रूप से सम्मिलित थे।[66] कारखानों का व्यय प्रतिवर्ष नवीन सामग्री के निर्माण के अनुसार घटता–बढ़ता रहता था।[67] अबुल फजल के अनुसार राजकोष से इन कारखानों के लिये आवश्यक धन के भुगतान के लिये विशेष खजांची नियुक्त किये जाते थे।[68]

कारखानों के प्रबन्धकर्ता को दीवान–ए–बुयूतात कहा जाता था।[69] वह कारखानों के व्यय के लिये राजकोष से धन वितरित करता था। वह वस्तुओं का मूल्य निर्धारण, कारखानों के मासिक व्यय का प्राक्कलन दीवान के कार्यालय भेजना, सम्राट के साथ चलने वाले कारखानों का दैनिक लेखा तैयार करना;

विभिन्न कारखानों से प्राप्त सुझावों द्वारा वस्तुओं का विक्रय करना; सम्राट के आदेश–पत्रों का निरीक्षण तथा आज्ञा पालन करना आदि कार्य करता था।[70] सम्राट् स्वयं उत्पादनकर्ता तथा व्यापारी था। राजकीय कारखानों में भाँति–भाँति की वस्तुएँ निर्मित होती थीं जिनकी पूर्ति राज्यों को की जाती थी तथा अन्य व्यक्तिगत खरीदार भी उनको खरीद सकते थे।[71] इसमें हथियार, सम्राट के लिये इत्र, दवाएँ, शाल, पगड़ियाँ, लोहा, ताँबा तथा अन्य धातुओं की वस्तुएँ आदि निर्मित की जाती थीं।[72] जब यह सामग्री राज्यों के विभिन्न विभागों में वितरित की जाती थी जब उनसे बाजार भाव के अनुसार मूल्य वसूल किया जाता था और यही मुनाफा कारखानों की आय होती थी।[73]

खानें – राजस्थान में विभिन्न प्रकार की धातुओं की खानें थीं जिनमें से कुछ खानें अत्यन्त उपयोगी थीं।

लोहा – अकबर के समय में लोहे की खानें बड़ी मात्रा में पायी जाती थीं। अजमेर सूबे के कई क्षेत्रों में लोहे की खानें थीं।[74] ऐसी सूचना कहीं नहीं मिलती कि लोहा विदेशों से आयात होता था क्योंकि भारत में ही आवश्यकता भर का लोहा उपलब्ध था।[75] लोहे का प्रयोग हथियार, बन्दूक तथा तोप इत्यादि बनाने में होता था।[76] मांसरेट के अनुसार दिल्ली सूबे के पानीपत क्षेत्र में बड़ी मात्रा में हथियार बनते थे। यह बहुत ही उत्तम परन्तु सस्ते होते थे।[77]

लोहे से तोप के गोले भी बनाये जाते थे।[78] बन्दूकें बनाने के क्षेत्र में अकबर ने कई नवीन प्रयोग किये। उसने एक ऐसी बन्दूक बनायी जो यात्रा के समय टुकड़ों में विभाजित की जा सकती थी। इसके अतिरिक्त उसने 17 बन्दूकों को इस प्रकार जोड़ा कि समय पड़ने पर सब एक साथ चल सकती थीं।[79] इसके अतिरिक्त अकबर ने अपने अनुभव के आधार पर एक प्रकार के पहिये का आविष्कार किया जिससे एक साथ कम समय में 16 बन्दूकों की नलियाँ साफ की जा सकती थीं।[80] अकबर के राजकीय कारखानों में बढ़िया तोपें बनती थीं जिनका स्थान तुर्की के बाद दूसरा था।[81]

लोहा बनाने की विधि – लोहे के निर्माण हेतु सर्वप्रथम खान से प्राप्त कच्चे लोहे को पृथ्वी से अलग किया जाता था। इसको अलग करने के लिये टुकड़ों के ऊपर तथा नीचे आग जलायी जाती थी। इस आग को अधिक समय तक जलाये रखने के प्रयास किये जाते थे।[82] जब गर्मी पाकर यह टुकड़े नरम हो जाते थे तब इनको पीट–पीट कर कठोर पत्थर की भाँति बना लिया जाता था इस प्रकार यह मिट्टी से अलग हो जाते थे। तत्पश्चात् इन्हें कारखानों में लाया जाता था तथा पुनः भट्टी में गर्म करके तथा कूटकर लोहा तैयार किया जाता था। इस विधि द्वारा हजारों मन लोहा बनाया जाता था।[83]

चमड़ा उद्योग

अकबरकालीन राजस्थान में चमड़े के उद्योग का भी विकास हुआ। चमड़े से कई चीजें बनाई जाती थीं, जैसे पानी का थैला, पानी की बालटी, तेल, घी, मदिरा और इत्र रखने के लिए बर्तन। भैंस के खाल की ढाल साधारणतया प्रयोग में लाई जाती थी। चमड़ा विदेशों को भेजा जाता था। कत्थई रंग के चमड़े के जूते बनाये जाते थे और बाहर भेजे जाते थे। बढ़िया किस्म के चमड़े के गद्दे और चटाइयाँ बनाई जाती थीं।

नमक – उत्तरी भारत में प्रमुख रूप से नमक दो स्थानों पर उपलब्ध था – अजमेर सूबे के साँभर में तथा लाहौर सूबे के शमशाबाद क्षेत्र में जो सिंध सागर के निकट था।[84] इसको प्राप्त करने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती थी। शमशाबाद में नमक की पहाड़ियाँ बीस कोस तक फैली हुयी थीं।[85] नमक बंजारों द्वारा बैलगाड़ियों पर लादकर ले जाया जाता था।[86] नमक का प्रयोग खाद्य सामग्री में किया जाता था। इसके अतिरिक्त औषधियों के निर्माण में लाहौरी नमक का प्रयोग होता था।[87] शमसाबाद में नमक से बर्तन, लैम्प के शेड, थाल अर्थात् रकाबी तथा अन्य वस्तुएँ निर्मित की जाती थीं।[88]

अजमेर में साँभर नहर के पानी का सुखाकर नमक बनाया जाता था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि साँभर नहर से विगत 400 वर्षों से नमक बनाया जा रहा था। इस नहर का नमक बहुत उत्तम होता था।[89]

शक्कर – अकबर के समय में आगरा, अयाना तथा काल्पी उत्तम श्रेणी की शक्कर के लिये प्रसिद्ध थे। शक्कर गन्ने से बनायी जाती थी।[90] गन्ने की खेती में कठिन परिश्रम करना होता था। इसके लिये समय की अधिक आवश्यकता होती थी क्योंकि दो फसलों के मध्य इस भूमि पर कोई अन्य फसल भी बोनी होती थी। फरवरी मास के मध्य से अप्रैल मास के मध्य तक गन्ना काटा जाता था तथा 15 फरवरी से 15 दिसम्बर के मध्य इसको कुचला जाता था। गन्ने की फसल के लिये बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती थी।[91]

आईने अकबरी की सांख्यिकी के अनुसार लगभग सभी स्थानों पर गन्ना उगाया जाता था। विशेषतः उत्तरी भारत में इसकी सर्वाधिक खेती होती थी।[92] गन्ना दो प्रकार का होता था – महीन पतला गन्ना तथा मोटा गन्ना। पतला गन्ना शक्कर बनाने में अधिक उपयोगी था, अतः इसकी खेती अधिक मात्रा में होती थी। अकबर ने गन्ने की खेती को प्रोत्साहित किया तथा भूमि कर में छूट भी दी।[93]

गन्ने को कुचलने तथा उससे शक्कर बनाने के अनेक कारखाने अर्थात् मिलें थी। इसके लिये दो प्रकार की विधियाँ प्रयोग में लायी जाती थीं –

पहली विधि – एक बर्तन जिसे मोर्टर कहते थे तथा एक हत्था जिसे पिस्टल कहते थे, प्रयोग में आता था। यद्यपि पत्थर का बर्तन अधिक उपयुक्त होता था परंतु महँगा होने के कारण खोखली लकड़ी का प्रयोग किया जाता था। इसमें सर्वप्रथम गन्ने के छोटे–छोटे टुकड़े करने होते थे तब उन्हें मोर्टर में डाला जाता था। यह विधि बहुत सुविधाजनक नहीं थी। गंगा के मैदानों में इस प्रकार की केवल एक मिल थी। परन्तु बंगाल के डेल्टा के मैदान, उड़ीसा, मध्य भारत तथा खानदेश, राजस्थान आदि में यह विधि प्रयोग की जाती थी।[94]

दूसरी विधि – दो बड़े लकड़ी के पहिये होते थे जो विपरीत दिशा में चलाये जाते थे। एक पहिया बैल द्वारा चलवाया जाता था तथा दूसरा पहिया पहले

पहिये के ऊपरी हिस्से में बने दाँतों से जुड़कर चलता था। गन्ने को इन दोनों पहियों के बीच में कुचला जाता था। इस प्रकार की मिलें सर्वप्रथम दक्षिण–पूर्व में आरम्भ हुईं।

शक्कर का प्रयोग औषधि, गन्ने के रस, शर्बत, सिरके, अरक तथा ब्राउन शक्कर आदि में किया जाता था। खाद्य पदार्थों में बड़ी मात्रा में शक्कर का प्रयोग होता था। निर्धन जनता गुड़ तथा उससे बनी मिठाइयों का सेवन करती थीं।[95] अबुल फजल ने शक्कर से गुड़ बनाने की विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।[96] अबुल फजल ने चार प्रकार की शक्कर का वर्णन किया है – प्रथम, परिष्कृत अर्थात् स्वच्छ शक्कर; द्वितीय, मिश्री शक्कर; तृतीय, सफेद शक्कर तथा चतुर्थ, ब्राउन शक्कर।[97]

अकबर के समय कृषि उत्पादन तथा अन्य उद्योग बहुत विकसित थे। उस समय लोग अपने कार्य को पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे, जिसके कारण कृषि में तथा अन्य क्षेत्रों में उन्नति हुई। अकबर द्वारा किये गये प्रयासों तथा प्रोत्साहन के कारण यह उन्नति हो सकी। कृषि उत्पादन में अकबर ने व्यावसायिक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित किया तथा करों में छूट दी। इससे देश की जनता तथा सरकार को आर्थिक लाभ पहुँचा। कृषि उत्पादन में देश आत्मनिर्भर था। अकबर ने कारखानों का प्रबन्ध अपने अधीन करके उसकी समस्त कार्य–प्रणाली पर विशेष ध्यान दिया जिसके कारण अनेक नये उद्योग विकसित हुए। कारीगरों को सुविधाएँ एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ जिसके कारण उनके कलाकौशल में वृद्धि हुई। विदेशी व्यापार को बढ़ावा मिला जिसके कारण आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सहायता प्राप्त हुई।[98]

सन्दर्भ :

1 पी.एन. चोपड़ा एवं अन्य, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, मैकमिलन, भाग 2, नई दिल्ली, 1975, पृ. 91

2 बी.एन. लुणिया, मुगल साम्राज्य का उत्कर्ष, कमल प्रकाशन, इन्दौर, 1997, पृ. 625.

3 हमीदा खातून, अर्बनाईजेशन, पृ. 37.

4 वही, पृ. 37.

5 आईने अकबरी, जिल्द 2, पृ. 47–48; निगारनामाएँ मुंशी, पृ. 174; हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स, पृ. 141–48.

6 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स, पृ. 137–42.

7 बाबरनामा, (हिन्दी अनुवाद), पृ. 504–505.

8 आइने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 280.

9 आई.एच.कुरेशी, दि एडमिनिट्रेशन ऑफ दि मुगल एम्पायर, पृ. 171–74.

10 सरवत फातिमा, अकबरकालीन आर्थिक व्यवस्था, मानक पब्लिकेशन्स प्रा. लिमिटेड, 1999, पृ. 69.

11 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, 1963, पृ. 1–2.

12 निजामुद्दीन अहमद, तबकाते–अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद – ब्रजेन्द्रनाथ डे तथा बेनीप्रसाद, देहली, 1990, पृ. 300.

13 बदायूँनी, भाग–2, पृ. 192.

14 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, पृ. 5.

15 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, पृ. 2.

16 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 273.

17 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 273.

18 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 273.

19 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 48, 69.

20 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 48, 70.

21 इरफान हबीब, टेक्नालाजी एण्ड बैरियर्स टू सोशल चेंज इन मुगल इण्डिया, पृ. 153.

22 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 70.

23 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 47, 48.

24 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 442.

25 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 47.

26 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 73, 122.

27 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 66,71.

28 मोरलैण्ड, डब्ल्यू.एच., इण्डिया ऐट दी डेथ ऑफ अकबर, एन इकोनामिक स्टडी, देहली, 1987, पृ. 96.

29 अकबरनामा, खण्ड –3, पृ. 526.

30 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, 1963, पृ. 102.

31 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, पृ. 249.

32 सरवत फातिमा, अकबरकालीन आर्थिक व्यवस्था, मानक पब्लिकेशन्स प्रा. लिमिटेड, 1999, पृ. 80.

33 इरफान हबीब, दी अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, बाम्बे, पृ. 212.

34 अकबरनामा, खण्ड –3, पृ. 526.

35 सरवत फातिमा, अकबरकालीन आर्थिक व्यवस्था, मानक पब्लिकेशन्स प्रा. लिमिटेड, 1999, पृ. 81.

36 विगत, 2.85–86.

37 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 94–95.

38 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 97.

39 डब्ल्यू.एच. मोरलैण्ड, फ्राम अकबर टू औरंगजेब, ए स्टडी इन इण्डियन इकोनामिक हिस्ट्री, लन्दन, 1923, पृ. 55.

40 डब्ल्यू.एच. मोरलैण्ड, फ्राम अकबर टू औरंगजेब, ए स्टडी इन इण्डियन इकोनामिक हिस्ट्री, लन्दन, 1923, पृ. 55, 56.

41 डब्ल्यू.एच. मोरलैण्ड, फ्राम अकबर टू औरंगजेब, ए स्टडी इन इण्डियन इकोनामिक हिस्ट्री, लन्दन, 1923, पृ. 56.

42 डब्ल्यू.एच. मोरलैण्ड, फ्राम अकबर टू औरंगजेब, ए स्टडी इन इण्डियन इकोनामिक हिस्ट्री, लन्दन, 1923, पृ. 94.

43 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 100–101.

44 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 101.
45 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 96; मोतमीद खाँ बख्शी इकबाल नाम ए जहाँगीरी, विवाखण्ड, कलकत्ता, 1865, पृ. 153.
46 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 97–98.
47 आईने अकबरी, जिल्द 2, पृ. 356; बर्नियर ट्रेवेल्स, पृ. 258–59, 402–04.
48 एलफिन्सटन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ. 489.
49 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 57, 102.
50 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 98.
51 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 57.
52 आईने अकबरी, जिल्द 1, पृ. 101–02.
53 हमीदा खातून, अर्बनाईजेशन, पृ. 54.
54 हमीदा खातून, अर्बनाईजेशन, पृ. 54.
55 हमीदा खातून, अर्बनाईजेशन, पृ. 55.
56 वही, पृ. 55.
57 वही, पृ. 56.
58 वही, पृ. 56.
59 पी.एन. चोपड़ा एवं अन्य, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, मैकमिलन, भाग 2, नई दिल्ली, 1975, पृ. 99.
60 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 14.
61 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 57.
62 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 123.
63 एस.आर. शर्मा, मुगल गवर्नमेण्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, बाम्बे, 1951, पृ. 62.
64 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 431.
65 यदुनाथ सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, हिन्दी अनुवाद – विजयनारायण चौबे, आगरा, 1960, पृ. 150.
66 यदुनाथ सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, हिन्दी अनुवाद – विजयनारायण चौबे, आगरा, 1960, पृ. 150.
67 यदुनाथ सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, हिन्दी अनुवाद – विजयनारायण चौबे, आगरा, 1960, पृ. 150.
68 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 14.

69 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 60, 272.

70 यदुनाथ सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, हिन्दी अनुवाद – विजयनारायण चौबे, आगरा, 1960, पृ. 61.

71 एस.आर. शर्मा, मुगल गवर्नमेण्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, बाम्बे, 1951, पृ. 61.

72 एस.आर. शर्मा, मुगल गवर्नमेण्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, बाम्बे, 1951, पृ. 61.

73 एस.आर. शर्मा, मुगल गवर्नमेण्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, बाम्बे, 1951, पृ. 61.

74 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 229.

75 इरफान हबीब, टेकनोलाजी एण्ड बैरियर्स टू सोशल चेंज इन मुगल इण्डिया, दी इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यू, खण्ड–5, संख्या 1,2, जुलाई, 1978, पृ. 158.

76 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 117, 119.

77 मोहम्मद अजीर अंसारी, यूरोपियन ट्रेवलर्स अण्डर दी मुगल्स (1580–1626), देहली, 1975, पृ. 3.

78 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 119.

79 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 119.

80 यूसुफ हुसैन, ग्लिमासेज ऑफ मेडिवल इण्डियन, बाम्बे, 1962, पृ. 78.

81 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 232.

82 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 232.

83 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 229.

84 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, हिन्दी अनुवाद – हरिवंशराय शर्मा, इलाहाबाद, 1976, पृ. 266.

85 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, हिन्दी अनुवाद – हरिवंशराय शर्मा, इलाहाबाद, 1976, पृ. 266.

86 अकबरनामा, खण्ड – 3, पृ. 586.

87 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 625.

88 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 319.

89 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 239.

90 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 192.

91 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 245.

92 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, अंग्रेजी अनुवाद – कोलोनल एच.एस.जैरेट, देहली, 1978, पृ. 207.

93 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 245.

94 इरफान हबीब, टेकनोलाजी एण्ड बैरियर्स टू सोशल चेंज इन मुगल इण्डिया, दी इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यू, खण्ड–5, संख्या 1,2, जुलाई, 1978, पृ. 153–154.

95 हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेण्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बाम्बे, 1978, पृ. 250.

96 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–1, अंग्रेजी अनुवाद – एच.ब्लाखमैन, देहली, 1965, पृ. 73.

97 अबुल फजल, आईन–ए–अकबरी, भाग–2, हिन्दी अनुवाद – हरिवंशराय शर्मा, इलाहाबाद, 1976, पृ. 168.

98 सरवत फातिमा, अकबरकालीन आर्थिक व्यवस्था, मानक पब्लिकेशन्स प्रा. लिमिटेड, 1999, पृ. 96–97.